

संक्षिप्त समाचार

रेलवे स्टेशन पहुंच मार्ग को आवगमन के लिए खोली जाये : राजेंद्र ताम्रकार

भिलाई (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी पिछड़ा वर्ग के प्रदेश उपाध्यक्ष राजेंद्र ताम्रकार ने त्रेस विजय जारी कर बताया है कि ताम्रगंध दो माह पूर्व भिलाई पावर हाउस चॉक से भिलाई पावर हाउस रेलवे स्टेशन मुख्य पहुंच मार्ग पर रेलवे के ठेकेदार द्वारा बोल्डर एवं मलमा डलवां कर रोड को पूर्ण रूप से बंद कर दिया गया है जिसके कारण इस मार्ग से वाहन चालक रेलवे स्टेशन नहीं पहुंच पा रहे हैं जिसके कारण आम यात्रियों को काफ़ी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रेस प्रतिनिधि अमीरचंद अरोरा तथा भिलाई शहर जिला कांग्रेस कमेटी के प्रेस प्रतिनिधि अमीरचंद अरोरा तथा भिलाई एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रभाकर गव जनबृहुत तथा नांगेंद्र तिवारी एवं बृंदा नेता शिवराज ताम्रकार आदि ने भी उक्त समस्या को गंभीरता से लेते हुए महाप्रबंधक दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर एवं मंडल रेल प्रबंधक दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर एवं स्थानीय प्रभारी रेलवे स्टेशन भिलाई पावर हाउस को भी पर लिखकर तत्काल स्टेशन आने जाने वाले मार्ग पर आम नागरिकों को परेशान करवाने के लिए रखवाये गए बोल्डर एवं मलमा को हटवाने की मांग की है जिससे आम यात्रियों को हो रही परेशानियों से राहत मिल सके।

माओवादियों ने की भाजपा कार्यकर्ता की हत्या

नारायणपुर-रायपुर (आरएनएस)। नारायणपुर के ग्राम दण्डवन में रात की 11:00 बजे माओवादियों ने भाजपा कार्यकर्ता की हत्या कर दी। मृतक बीजेपी कार्यकर्ता पंचमादास मानिकुपुरी दाढ़वन गांव के उपसरपंच के पास में कार्यरत था। इसनाम ही नहीं हत्या के बाद घटना सेत्र में माओवादियों द्वारा पोस्ट पॉस्टले डाले गए हैं। जिसमें बीजेपी कार्यकर्ता पर मुख्यमंत्री करने का आरोप है।

सीबीआई ने कोल घोटाले में एसईसीएल के अफसरों का बयान किया दर्ज

अंबिकापुर-रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ में हुए कोल घोटाले की जांच कर रही सीबीआई ने एसईसीएल के रेहो भूमिगत खदान परियोजना में अपनी जांच करने के बाद वापस लौट गई है। जांच में दस्तावेजों की पड़ताल व संबंधित अधिकारियों के बयान दर्ज किए गए। जुलाई 2022 में घोटाला समेन आया था। तब कंपनी की विजिलेंस टीम ने रेहो खदान के कोल स्टॉक की जांच में 2700 टन कोलावा कम पाया था बड़े पैमाने पर गड़बड़ी की पुष्टी हो जाने के बाद घटना सेत्र में द्वारा पोस्ट पॉस्टले डाले गए हैं। जिसमें बीजेपी कार्यकर्ता पर मुख्यमंत्री करने का आरोप है।

बता दें कि राज्य की पिछली कांग्रेस सरकार ने 22 दिनों तक सकूत एकत्री करती रही। अब तीसरी बार 10 अप्रैल को सीबीआई जी टीम यहां पहुंची और 22 दिनों तक सकूत एकत्री करती रही।

अब तीसरी बार 10 अप्रैल को सीबीआई जी टीम यहां पहुंची।

अब

तीसरी

बार

पहुंची।

ज्योत्सना महंत के नामांकन में पहुंचे कांग्रेस के दिग्गज नेता

नामांकन जनसभा में उमड़ा सैलाब

कोरबा(विश्व परिवार)।

लोकसभा से कांग्रेस प्रत्याशी सांसद ज्योत्सना चरणदास महंत ने मंगलवार को शुभ मुहुर्में अपना नामांकन पत्र रिटार्निंग ऑफिसर के समक्ष दाखिल किया। इस दौरान उनके साथ पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, नेता प्रतिष्ठान डॉ. चरणदास महंत, पीसीसी चीफ दीपक बैज, पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल उपस्थित रहे। ज्योत्सना महंत के नामांकन अवसर पर डॉ. भीमराव अंबेडकर औपन एयर आडिओरियम में आमसभा आयोजित की गई जिसमें कोरबा के अलावा रामपुर, कटघोरा, पाली-तानाखार, मरवाह, भरतपुर सोनहरा, मनेंद्रगढ़ व बैंकटूरु-कोरबा जिला नामांकन अवसर पर कांग्रेस के जिलाध्यक्ष, मंत्री, भूपेश बघेल ने त्रिपुरा कांग्रेस, एनएसयूआई विधायक, जनपद, जिला पंचायत, नगर पालिका परिषद, नगर निगम के निर्वाचित



जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ आठों विधानसभा से कांग्रेस ब्लाक अध्यक्ष, सेवा दल महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस, एनएसयूआई विधायक, जनपद, जिला पंचायत, नगर पालिका परिषद, नगर निगम के निर्वाचित

सभा को संबोधित करते हुए प्रत्याशी ज्योत्सना महंत ने कहा कि लोकसभा में कांग्रेस के मात्र 9 सांसद भाजपा के 10 सांसद भारी थे। पूरे 5 साल छोटीसगढ़ की सरकार और भाजपा के 10 सांसद भी मिलकर देन नहीं चला पा रहे हैं, विकास तो दूर की बात।

उठते हुए हम अधिकारों के लिए उगातार लड़ते हैं। वे पूछते हैं कि 5 साल तक मैंने क्या किए तो वे जनता को बताएं कि 10 साल तक उठाने क्या किया। डलल इंजन की सरकार और भाजपा के 10 सांसद भी मिलकर देन नहीं चला पा रहे हैं, विकास तो दूर की बात।

दरअसल उनके पास कांग्रेस-गांधी परिवार को बुरा कहने व नीचा दिखाने का एकमात्र मुद्दा है। वे सिर्फ मोदी की गारंटी लेते हैं लेकिन हम पूरे कांग्रेस की गारंटी को घर-घर पहुंचाना है। डॉ. शिव डहरिया, मोहन मरकार, अर्चना पोते ने भी अपनी बात रखी। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने चुटकियां लेते हुए कहा कि दुर्ग में सरोज पाण्डेय की दाल नहीं गली तो वे कोरबा आ गई हैं। बघेल ने कहा कि मात्र 4 माह की विष्णुदेव सरकार में बिजली संयं-सायं कट रही है। गरीबों का चालत, आदिवासियों का चाला, गुड़, शक्कर, नमक संयं-सायं बदल हो रहा है। उठाने कहा कि बीजेपी वाले ताने का काम करते हैं, पहले रमन सिंह ने डगा और अब साय की सरकार। कांग्रेस किया कि विष्णुदेव को भोग लगाए बिना राहस मिलरों का डीओ नहीं कटता। चालत वाले भोग लगा रहे और दास वाले तर्पणी कर रहे हैं। पीसीसी अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि संसद में कांग्रेस के 2 विधायकों ने 5 साल तक भाजपा के संसदीं व मोदी की को घर-घर पहुंचाना है। डॉ. शिव डहरिया, मोहन मरकार, अर्चना पोते ने भी अपनी बात रखी। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने चुटकियां लेते हुए कहा कि दुर्ग में सरोज पाण्डेय की दाल नहीं गली तो वे कोरबा आ गई हैं। बघेल ने कहा कि मात्र 4 माह की विष्णुदेव सरकार में बिजली संयं-सायं कट रही है। गरीबों का चालत, आदिवासियों का चाला, गुड़, शक्कर, नमक संयं-सायं बदल हो रहा है। उठाने कहा कि बीजेपी वाले ताने का काम करते हैं, भेज दिया गया। दुर्ग लोकसभा में इनका थप्पड़ काढ भले लोग भूल गए हों लेकिन साहू समाज के एक व्यक्ति को थप्पड़ पर दुर्ग की जनता ने इन्हें रुपी से ही हटा दिया। एक तरफ थप्पड़ मारने वाली तो दूसरी तरफ जनता की बात करने वाली आपके सामने है।

बालकों जोन में निकाली गई मतदाता जागरूकता ऐली देशी कट्टा बेचने ग्राहक की तलाश कर रहा युवक पकड़ाया

अपर आयुक्त ने मतदाताओं को दिलाई मतदाता शपथ



अंतर्गत मतदाता जागरूकता ऐली का आयोजन कर मतदाताओं को उनके मताधिकार करने हेतु नाटक, ऐली, नारा लेखन निर्बंध, भाषण, पोस्टर तथा अन्य प्रतियोगिताओं के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है। जिले में चलाए जा रहे मतदाता जागरूकता अवसर पर निगम के उपर्योग रखते हुए उन्हें अनिवार्य रूप से मतदाता जागरूकता करने तथा अन्य मतदाताओं को इस अवसर पर निगम के उपर्योग रखते हुए उन्हें अनिवार्य रूप से मतदाता जागरूकता करने तथा अन्य मतदाताओं को इस हेतु जागरूक

करने का आग्रह किया। बालकों को आयोजित मतदाता ऐली, विभिन्न स्थितियों व रहवासी क्षेत्रों से होते हुए मिनीमाता स्कूल के जागरूक किया गया। निगम के अपर आयुक्त श्री विनय मिश्रा ने उपस्थित मतदाताओं को अपने मताधिकार का अनिवार्य रूप से मतदाता जागरूकता करने का संकल्प दिलाया तथा अन्य अधिकारी कर्मचारी एवं विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं विवार्थी उपस्थित थे।

कोरबा(विश्व परिवार)। शहर की कोतवाली पुलिस ने एक युवक को देशी कट्टा के साथ गिरफ्तार किया है। युवक अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र निष्कर्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गिरफ्तारी को अक्षयर रखते हुए, निर्भावक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य विस्तीर्णी भी प्रतोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इस अवसर पर निगम के उपर्युक्त श्री वी.पी.त्रिवेदी, जिला कमिशनर श्री एन.के.नाथ, सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी एवं विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं विवार्थी उपस्थित थे।

कोरबा(विश्व परिवार)। जिला निर्वाचन अधिकारी अंजीत वर्षते के निर्वाचन में जिले के सभी विकासखाड़ों में मतदाता कर्मियों के प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कोरबा के विद्युत गृह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कल मतदाता कर्मियों को द्वितीय चरण का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें पीसीसी अधिकारी, मतदाता अधिकारी क्रमांक 01, 02 व 03 शामिल हैं। प्रथम पारी तारीख 03:30 बजे 20 बजे तक एवं द्वितीय पारी दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक आयोजित हुई। प्रथम पारी के अन्य विकासखाड़ों में भी मतदाता कर्मियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है। गैरतलब है कि विगत 02 अप्रैल 2024 से मतदाता कर्मियों को प्रथम चरण का प्रशिक्षण दिया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को समय पर उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्रस्तुत किया। साथ ही अकारण अनुपस्थित होने वाले प्रशिक्षणार्थियों पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं।

कोरबा(विश्व परिवार)। कोतवाली पुलिस ने एक युवक को देशी कट्टा के साथ गिरफ्तार किया है। युवक अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र निष्कर्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गिरफ्तारी को अवश्यक रूप से देशी कट्टा लेकर बेचने के प्रतिक्रिया के द्वारा भासू रहा। सूचना पर कोतवाली पुलिस तथा साइबर टीम के द्वारा तत्काल टीम बनाकर आयोजित हुई। इसी प्रकार जिले के अन्य विकासखाड़ों में भी मतदाता कर्मियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है। यह गैरतलब है कि विगत 02 अप्रैल 2024 से मतदाता कर्मियों को प्रथम चरण का प्रशिक्षण दिया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को समय पर उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्रस्तुत किया। साथ ही अकारण अनुपस्थित होने वाले प्रशिक्षणार्थियों पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं।

ज्योत्सना की नामांकन रैली में उमड़ा जन सैलाब

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा लोकसभा निर्वाचन 2024 के सफल नियांचन हेतु कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अंजीत वर्षते के निर्वाचन में जिले के सभी विकासखाड़ों में मतदाता कर्मियों के प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कोरबा के विद्युत गृह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कल मतदाता कर्मियों को द्वितीय चरण का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें पीसीसी अधिकारी, मतदाता अधिकारी क्रमांक 01, 02 व 03 शामिल हैं। यह प्रशिक्षण दो प्रालियों में आयोजित हुआ। प्रथम पारी तारीख 03:30 बजे 20 बजे तक एवं द्वितीय पारी दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक आयोजित हुई। इसी प्रकार जिले के अन्य विकासखाड़ों में भी मतदाता कर्मियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है। गैरतलब है कि विगत 02 अप्रैल 2024 से मतदाता कर्मियों को प्रथम चरण का प्रशिक्षण दिया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को समय पर उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्रस्तुत किया। साथ ही अकारण अनुपस्थित होने वाले प्रशिक्षणार्थियों पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं।

ज्योत्सना की नामांकन रैली में उमड़ा जन सैलाब

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा लोकसभा निर्वाचन 2024 के सफल नियांचन हेतु कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अंजीत वर्षते के निर्वाचन में जिले के सभी विकासखाड़ों में मतदाता उपस्थिती का विवरण किया गया। जिसमें पीसीसी अधिकारी, मतदाता अधिकारी क्रमांक 01, 02 व 03 शामिल हैं। यह प्रशिक्षण दो प्रालियों में आयोजित हुआ। प्रथम पारी तारीख 03:30 बजे 20 बजे तक एवं द्वितीय पारी दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक आयोजित हुई। इसी प्रकार जिले के अन्य विकासखाड़ों में भी मतदाता कर्मियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है। गैरतलब है कि विगत 02 अप्रैल 2024 से मतदाता कर्म

संपादकीय मोती

मुलायमियत न बरती जाए

हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के कनीना में उन्हाणी गांव के करीब स्कूल बस के पेड़ से टकाराने पर छह बच्चों की मौत वाकई दिल कचोटने वाली है। हादसे के बाक चालक नशो में था। बस में 43 बच्चों समेत एक शिक्षिका भी थी। भिंडूत इतनी भीषण थी कि 34 छात्र वायल हो गए, जिनमें से नौ आईसीयू में हैं। बस चालक, प्रधानाचार्य और स्कूल सचिव को तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया। चालक तेज गति से वाहन चला रहा था, मोड़ पर संतुलन खोने से बच्चे खिड़कियों से बाहर उछल कर गिर गए। मरने वाले छात्र 13 से 16 साल की उम्र वाले हैं। हादसे के बाद प्रशासन और नेताओं ने रस्मादायगी करने में देर नहीं की। इस दुर्घटना में पूर्व मंत्री के परिवार का बच्चा भी मरा गया है। दिल दहलाने वाले इस घटना की उच्चस्तरीय जांच करवाई जाएगी। साथ ही, विद्यालय पर सख्त कार्रवाई की बात भी हो रही है। मुन्-यह बात नहीं की जा रही कि छात्रों की जिंदगी को जोखिम में डालने वालों पर नकेल कैसे डाली जाए। देश भर से कहीं-न-कहीं से इस तरह के हादसों की खबरें आती रहती हैं। स्कूलों के लिए विभिन्न नियम बनाए जाते हैं मगर उनको निर्धारित करने और उहें सख्ती से लागू करने वालों को जिम्मेदार नहीं बनाया जाता। थोक के भाव में गली-गली स्कूल खोले जा रहे हैं, उन पर दू-दराज से बच्चों को लाने-ले जाने की परिवहन व्यवस्था करनी होती है जिसके प्रति बेहद लापरवाही बरती जाती है। जब भी इस तरह के हादसे महानगरों के बाहर होते हैं तो उन्हें उतनी गंभीरता से नहीं लिया जाता। शिक्षा वेभाग, शिक्षा मंत्रालय समेत सर्वधित अधिकारियों को भी अहसास कराया जाना जरूरी है कि उन्होंने घोर लापरवाही बरती है। गैर-जिम्मेदारी सिर्फ मोटी रकम वसूलने वाले निजी विद्यालय ही करते, बल्कि सरकारी स्कूलों की स्थिति और भी खराब है। अभिभावकों के पास प्रायः न्यूनतम अधिकार होते हैं, उनकी शिकायतों की अनसुनी की जाती है। यदि वे सख्ती से किसी तरह की आलोचना करते हैं तो बच्चे के प्रति अनुचित बर्ताव होने की आशंकाएं बढ़ जाती हैं, या उन्हें स्कूल से निलंबित करने की धमकियां दी जाती हैं। हादसे के बाद नये-नये नियम लादने से भी कोई सुधार नहीं होने वाला। मारे गए बच्चों के अभिभावकों की क्षतिपूर्ति तो असंभव है, मगर देश भर के रोपें छात्रों के जीवन को जोखिम में डालने वालों के साथ किसी भी तरह की मुलायमियत न बरती जाए।

विचार

सांप्रदायिक और विभाजनकारी प्रवृत्ति के विरुद्ध खड़ा होने की जरूरत.....

अवधश कुमार

समाजवादी पार्टी प्रमुख अधिवेश यादव ने गजिपुर में मुख्तार अंसारी के घर जाकर उसे महान और मसीहा साबित करने की उस अभियान को आगे बढ़ाया जो उसकी मौत के समय से ही चल रहा है। उन्होंने कहा कि जनता ने जेल में रहते हुए मुख्तार को पांच बार विधायक बनाया तो इसका मतलब है कि वह जनता के दुख दर्द में शामिल रहे और उसी का परिणाम है कि जनाजे में इतनी अधिक भीड़ उमड़ी। उन्होंने बांदा जेल में मुख्तार की मृत्यु पर सरकार को धेरा तथा उसकी तुलना रूस में बिना नाम लिए विपक्ष के नेता एलेक्सी नवलनी की जेल में हुई मृत्यु से कर दी। मुख्तार अंसारी पिछले लंबे समय से जब भी वीडियो में आया काफी कमज़ोर दिखता था। व्हीलचेयर पर ही उसके बाहर निकलने या अंदर जाने की तस्वीरें आई थीं। उसकी मेडिकल रिपोर्ट में अनेक बीमारियाँ लिखी हुई हैं। इतनी बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति की कभी भी किसी कारण से मृत्यु हो सकती है। वैसे भी बाहुबल और धनबल की बदौलत बादशाहत कायम करने की मानसिकता में जीने वाले व्यक्ति को जेल में आम अपराधी की तरह व्यवहार से मानसिक आघात लगाना बिल्कुल स्वाभाविक है। प्रचार यही हो रहा है कि उसे मारा गया है। कुछ दिनों से उसके परिवार और वकील धीमा जहर देने का आरोप एक रणनीति के तहत लग रहे थे, जिसका उद्देश्य जमानत दिलाना या मन मुताबिक किसी जेल में शिफ्ट करना था। मृत्यु से कुछ दिनों पहले बेटे से बातचीत के ऑफियो से उसके काफी अस्वस्थ व कमज़ोर होने के साथ गहरी निराशा में ढूबे होने का पता भी चलता है। उसकी मृत्यु पर सपा, बसपा या कुछ अन्य

पाटीयों, मजहबों नेताओं आदि ने जिस ढंग का माहाल बनाया है उसने आम व्यक्ति को उद्भेदित किया है। ऐसा कोई कारण नहीं दिखता जिससे प्रशासन या जेल या सरकार उसे तत्काल गैरकानूनी तरीके से मारने का कदम उठाए। इस समय उसकी मृत्यु से किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं होने वाला था। योगी आदित्यनाथ सरकार की दृष्टि से यह रिस्ति ज्यादा अनुकूल थी। मृत्यु के बाद उसे गरीबों का मसीहा और नायक बनाया जाना भय पैदा करता है। जितनी संख्या में उसके नमाज

ए जनाजा में लोग शामिल हुए वह समान्य अवस्था का द्योतक नहीं है। किसी उदारवादी, समाज हितेशी, हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए काम करने वाले मुसलमान की मृत्यु पर न ऐसी प्रतिक्रियाएं आर्ती हैं न इन्हें लोग इकट्ठे होते हैं और न उनमें भावविह्लता और आक्रामकता देखी जाती है। इसके विपरीत चाहे मुख्तार अंसारी हो, बिहार का बाहुबली सैयद शाहबुद्दीन, अतीक अहमद या मुंबई बम विस्फोटों का आतंकवादी टाइगर मेनन उनके जनाजे में इन्हें बड़े जन समूह का उभरना मुस्लिम समाज के अंदर बढ़ती ऐसी प्रवृत्ति है, जिससे डरने और जिसको हर हाल में रोके जाने की आवश्यकता है। मुख्तार अंसारी न्यायालय द्वारा सिद्ध माफिया, हत्यारा, अपहरणकर्ता, सांप्रदायिक दंगा करने वाला बाहुबली था। 65 से ज्यादा मुकदमे उसके नाम पर थे जिनमें आठ में उसे सजा दी जा चुकी थी। इनमें दो में उम्र कैद की सजा थी। न्यायालय द्वारा घोषित सजा प्राप्त अपराधी को मुसलमानों का नायक, गरीबों का मसीहा बताया जाए तथा राजनीतिक पार्टीयां और नेता उसके पक्ष में बयान दें इससे ज्यादा डारवाना देश के लिए कुछ नहीं हो सकता? वे सरकार और पुलिस प्रशासन के साथ न्यायपालिका पर भी प्रश्न उठा रहे हैं 2013 में मुंबई बम विस्फोटों के अपराधी टाइगर मेनन के जनाजे में मुंबई में उमड़ी भीड़ ने पहली बार देश को हैरत में डाला था। उस समय से यह एक स्थापित प्रवृत्ति है। अतीक अहमद की

हत्या पुलिस का सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्न था लोकन उसका मृत्यु पर विशेष नमाज जगह-जगह अदा कर जनत की दुआ करना किस बात का द्योतक था ? डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की मृत्यु पर इस तरह का दृश्य नहीं था। बस्तुतः उनके जनाजे में हिंदुओं की संख्या सर्वाधिक थी। कांग्रेस के शासनकाल से उत्पन्न राजनीति के अपराधीकरण के भयावह दौर में ऐसे अपराधी और बाहुबली, जिन्हें जेल में होना चाहिए वो माननीय विधायक और सांसद बनकर नीति-नियंता बन गए। अतीक, अंसारी या शहाबुद्दीन जैसों की एकमात्र योग्यता यही थी कि वो अपने अपराध के बल पर साम्राज्य कायम कर चुके थे तथा एक क्षेत्र विशेष में चुनाव जीतने-जितना में सक्षम थे। इसी कारण सपा-बसपा दोनों ने उन्हें महत्व दिया और कांग्रेस पार्टी का भी उन्हें समर्थन ही रहा। जरा सोचिए, मुख्खार अंसारी ने उत्तर प्रदेश के वर्तमान कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय के बड़े भाई अवधेश राय की सरेआम हत्या करवाई और आज कांग्रेस उसे अपराधी तक कहने के लिए तैयार नहीं है।

कृष्णमोहन झा

देश में लोकसभा चुनावों की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इसके साथ ही सभी राजनीतिक दलों का चुनाव प्रचार अभियान भी गति पकड़ने लगा है क्षेत्रों में सत्तारूढ़ राजग की मुखिया भारतीय जनता पार्टी के प्रचार अभियान के सामने उसके विरोधी दलों का प्रचार अभियान अभी भी फैका दिखाई दे रहा है। दरअसल इन लोकसभा चुनावों में विरोधी दलों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिनसे पार पाने का कोई रास्ता उह्हें नहीं सूझा रहा है। विरोधी दलों के नेताओं का भाजपा के प्रति बढ़ता आकर्षण सबसे बड़ी चुनौती है। कई विरोधी दलों के बड़े बड़े नेता भाजपा में शामिल हो चुके हैं और यह सिलसिला निकट भविष्य में थमने की कोई संभावना भी नजर नहीं आती। मतलब साफ है कि वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में भाजपा ही उह्हें उनके सुरक्षित राजनीतिक भविष्य की गारंटी दे सकती है। ऐसा नहीं है कि विगत माहों में भाजपा के किसी नेता ने भाजपा विरोधी दल का दामन नहीं थापा है लेकिन भाजपा में शामिल होने वाले विरोधी नेताओं की संख्या भाजपा छोड़ कर जाने वाले नेताओं की तुलना में बहुत अधिक है। इतना ही नहीं, विरोधी दलों से भाजपा में आने वाले अनेक नेता पुराने दलों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा रहे थे। विरोधी दलों के ऐसे वरिष्ठ नेताओं का भाजपा में शामिल होना निःसंदेह उनके लिए चिंता का विषय है और इससे उनके चुनाव अभियान का प्रभावित होना भी स्वाभाविक है। 25 से अधिक भाजपा विरोधी दलों के गठबंधन के पास एक भी ऐसा चेहरा नहीं है जिसके पास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की करिश्माई लोकप्रियता को टक्कर देने का सामर्थ्य हो। मोदी अपने विशिष्ट अंदाज में जब अपना भाषण शुरू करते हैं तभी से मोदी मोदी के नारे गूंजना शुरू हो जाते हैं। इंडिया गठबंधन में यू तो 25 से दल शामिल हैं परन्तु उसके किसी भी घटक के पास मोदी के समान प्रभावशाली वक्ता नहीं हैं। मोदी जितनी देर बोलते हैं उतनी देर मोदी मोदी के नारों से आकाश

A portrait of Prime Minister Narendra Modi. He has white hair and a full white beard. He is wearing glasses and a colorful, patterned shirt. He is gesturing with his right hand near his chin. The Indian flag is visible in the background.

गंजता रहता है। एक ओर उनकी आवाज़ में दमखम है तो दूसरी वे अपने बात को अकाट्य तर्कों के साथ सही साबित करने की कला में भी प्रवीण हैं। मोदी के आक्रमण के आगे विपक्ष असहाय नजर आता है। वास्तविकता तो यह है कि मोदी ने समूचे विपक्ष को बचाव की मुद्रा में ला दिया है और वह भी अंदर ही अंदर यह महसूस करने लगा है कि प्रधानमंत्री मोदी को लगातार तीसरी बार सत्ता में आने से रोकना उसके बस की बात नहीं है। जनता को बताने के लिए मोदी के पास उनकी सरकार की दस साल की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं, भविष्य के लिए योजनाएँ हैं और साथ में हर योजना को निश्चित समय सीमा में अमलीजामा पहनाने की गारंटी भी है। सबसे बड़ी बात यह है कि देश की जनता को मोदी की हर गारंटी पर पूरा भरोसा है। दूसरी ओर कांग्रेस सहित अन्य विरोधी दलों की मुश्किल यह है कि वे सञ्जबाग तो दिखा सकते हैं लेकिन उनके पूरे होने की गारंटी देना उनके लिए संभव नहीं है। इन लोकसभा चुनावों में भाजपा सुनियोजित रणनीति के साथ मैदान में उत्तरी है। भाजपा की चुनावी रैलियों और रोड शो में उमड़ने वाली अपार भीड़ इस बात की परिचायक हैं कि उसे अपनी चुनावी रणनीति में पर्याप्त सफलता मिल रही है और चुनावी रणनीति

में मिल रही इस सफलता से कार्यकर्ताओं का मनोबल और उत्साह दुगना होना स्वाभाविक है। दूसरी ओर विरोधी दलों के प्रचार अभियान में अभी भी वह उमंग, उत्साह और जोश दिखाई नहीं दे रहा है जो भाजपा के लिए चिंता का कारण बन जाए। विरोधी दलों के साथ दिक्षित यह है कि वे महंगाई, बेरोजगारी, किसानों की समस्याओं, भृष्टाचार को लेकर मोदी सरकार पर हमेशा से हमलावर होने के बाबजूद इन चुनावों में इनमें से कोई भी एक मुद्दे को चुनावी मुद्दा बनाने में असफल सिद्ध हो रहे हैं। 25 से अधिक विरोधी दलों ने मिलकर इंडिया गठबंधन तो बना लिया परंतु वे जनता को यह संदेश नहीं दे पाए कि मोदी सरकार के विरुद्ध वे पूरी तरह एकजुट हैं। इंडी द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किए जाने के बाद इंडिया गठबंधन के घटक दलों ने दिल्ली के रामलीला मैदान में रैली का आयोजन कर अपनी एकजुटता प्रदर्शित करने का प्रयास किया परन्तु वह मुद्दा आम जनता से जुड़ा नहीं था इसलिए विपक्ष उसके माध्यम से अपनी एकजुटता का संदेश देने में सफल नहीं हो सका। विपक्षी दलों की यह एक जुटा उनके चुनाव अभियान में नदराद है। इसमें कोई शक नहीं कि अगर हर लोकसभा सीट पर इंडिया गठबंधन ही चुनाव लड़ रहा सरकार और उसकी मुखिया भाजपा को कड़ी चुनौती पेश कर सके। देश में लोकसभा चुनावों की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इसके साथ ही सभी राजनीतिक दलों का चुनाव प्रचार अभियान भी गति पकड़ने लगा है। केंद्र में सत्तारूढ़ राजग की मुखिया भारतीय जनता पार्टी के प्रचार अभियान के सामने उसके विरोधी दलों का प्रचार अभियान अभी भी पैका दिखाई दे रहा है। हरअसल इन लोकसभा चुनावों में विरोधी दलों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिनसे पार पाने का कोई रास्ता उन्हें नहीं सूझ रहा है। विरोधी दलों के नेताओं का भाजपा के प्रति बढ़ता आकर्षण सबसे बड़ी चुनौती है। कई विरोधी दलों के बड़े बड़े नेता भाजपा में शामिल हो चुके हैं और यह सिलसिला निकट भविष्य में थमने की कोई संभावना भी नजर नहीं आती। मतलब साफ है कि वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में भाजपा ही उन्हें उनके सुरक्षित राजनीतिक भविष्य की गारंटी दे सकती है। ऐसा नहीं है कि विगत माहों में भाजपा के किसी नेता ने भाजपा विरोधी दल का दामन नहीं थामा है लेकिन भाजपा में शामिल होने वाले विरोधी नेताओं की संख्या भाजपा छोड़ कर जाने वाले नेताओं की तुलना में बहुत अधिक है।

बड़ा भंगालः चुनौतियां अपार, आकर्षण बरकरार

हमाचल सरकार गामया के साजन म याद चार महीनों के लिए ही सही, ऑनलाइन बुकिंग द्वारा हेलीकाप्टर सेवा और बड़ा भंगाल में पर्यटकों के रहने-खाने की व्यवस्था एक पैकेज के तहत व्यवस्थित तरीके से करे, तो निश्चित तौर पर बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आना और ठहरना चाहेंगे, जिससे न केवल बड़ा भंगाल क्षेत्र में पर्यटक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा, अपितु राज्य की आर्थिकी को भी मजबूती मिलेगी। क्षेत्र की समस्याओं का समाधान जल्द हो पहाड़ों की ऊँचाइयों को फतह कर चोटी पर पहुंचने की चाहत हमेशा से मनुष्य को कुछ अद्भुत कर गुजरने के लिए प्रोत्साहित करती रही है। इसलिए संसाधनों के अभाव के बावजूद विश्व के दुर्गम इलाकों तक भी मनुष्य ने अपने जोश और जुनून के चलते पहुंच बनाई है। चाहे वह एवरेस्ट पर्वत हो अथवा उत्तरी और दक्षिणी धर्घों की खोज, कुछ हटकर करने की चाहत के चलते ही हजारों लोगों ने अपने नाम गिनीज बुक ऑफवर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज करवाने में सफलताएं हासिल की हैं। आज भी भारत और हिमाचल सहित अनेक राज्यों में ऐसे दर्शनीय स्थल हैं जहां पहुंचना अभी भी असंभव समझा जाता है। हिमाचल प्रदेश में एक ऐसा ही रमणीय अनछुआ और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर बैंजनाथ उपमंडल का बड़ा भंगाल क्षेत्र है जहां सड़क सुविधा न होने के कारण पहुंचना किसी चुनौती से कम नहीं माना जाता है। हिमालय की धौलाधार श्रृंखला में समुद्र तल से 2550 मीटर की ऊँचाई पर स्थित बड़ा भंगाल एक सुंदर घाटी है। यह घाटी विशाल पहाड़ों से घिरी हुई है और बफ्स ढंका चाटया, हर-भर घास के मदाना और चमचमाती नदियों के मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती है। 169 घरों और 620 के लगभग आबादी वाले बड़ा भंगाल गांव में लोग लगभग 7 महीने ही रहते हैं और जब बर्फ पड़ती है तो अधिकांश लोग बीड़ बिल्डिंग में आ जाते हैं जहां उनके घर हैं अथवा वे किराए के घरों में रहते हैं। इसी प्रकार वहां का स्कूल और पढ़ने वाले बच्चे भी बीड़ स्थित स्कूल में स्थानांतरित हो जाते हैं। यहां पहुंचने के लिए बेहद दुर्गम, ढांकुयुक खतरनाक दर्रों और पहाड़ों से होकर पहुंचना होता है। ढांकें इतनी खतरनाक कि एक बार पैर फिला तो पूर बचाने वाला कोई नहीं। रोजगार के नाम पर जंगल से लकड़ियां चुनना, पशुपालन और भेड़-बकरियां पालना यहां के लोगों की मुख्य गतिविधियां हैं। दुर्गम इलाके में होने की वजह से और सड़क मार्ग न होने के कारण इस गांव का भारत के शेष क्षेत्रों से संपर्क कटा रहता है। लोगों की आवाजाही बहुत कम है, सर्दियों में केवल बुरुज़ लोग ही वहां घरों और पशुधन की देखभाल के लिए रह जाते हैं, जिनके समक्ष भयानक सर्दी जिनित समस्याएं बरकरार रहती हैं। बड़ा भंगाल में एक आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी, पशु औषधालय, स्कूल, पीडब्ल्यूडी, आईपीएच और इलेक्ट्रिसिटी विभाग के कार्यालय तो हैं, लेकिन वहां कर्मचारियों की कमी खलती है। साई फट्टेशन ने वर्ष 2003-04 में 40 किलोवाट का एक हाइडल इलेक्ट्रिसिटी प्रोजेक्ट बड़ा भंगाल में लगाया था, लेकिन बाद में रखरखाव के अभाव के कारण वह बंद पड़ा है। बड़ा भंगाल के लोगों

का 9 मांग है जिनम मुख्यतः सड़क निर्माण, बजला घर को ठीक करना, सामाजिक पेंशनधारकों को पेंशन राशि का समयबद्ध वितरण, जिनके बैंक अकाउंट बोड में हैं, लेकिन वह पिछले 4 सालों से अस्वस्थ होने की वजह से नहीं जा पा रहे हैं, को हेली सुविधा उपलब्ध करवाना शामिल हैं। बर्फ के दिनों में क्योंकि दो-दाई सौ लोग ही गांव में रहते हैं, बीमार लोगों को माँके पर स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचे, इसके लिए हेली सर्विस की मांग भी प्रमुख है। बड़ा भंगाल गांव में जो हेलिपैड है, उसे मरम्मत की दरकार है ताकि हेलिकॉप्टर की सुरक्षित लैंडिंग हो सके। जब बात पहाड़ों पर चढ़ने की ओर वादियों को निहारने की ओर ट्रैकिंग की आती है, तो शायद हिमाचल से बढ़िया एडवेंचर डेस्टिनेशन कोई दूसरा नहीं हो सकता है। उसमें भी बड़ा भंगाल एक ऐसा क्षेत्र है जिसे अनुभुआ और चुनौतीपूर्ण समझते हुए साहसिक गतिविधियों में रुचि रखने वाले लोग ही वहां पहुंचना पसंद करते हैं। प्रतिवर्ष 200-300 ट्रैकर्स कुद्दू की काली हाणिण्‌ हेली (चंबा) के ग्रास्ते से और मुल्थान वाया थामसर ज़ोत, बड़ा भंगाल पहुंचते हैं। एडवेंचर और ट्रैकिंग में रुचि रखने वाले लोग यहां आते रहते हैं जिनमें विदेशियों की काम्पे संख्या रहती है। अधिकांश टूरिस्ट और ट्रैकर्स अपने गाइड के साथ ही आते हैं। बड़ा भंगाल गांव की साक्षरता दर कम है। मनोरंजन के कोई साधन नहीं हैं। यहां के अधिसंख्य लोग ठाकुर राजपूत जातियों के हैं जिन्हें सरकार ने ओबीसी कैटेगरी में रखा है, लेकिन इनकी मांग है कि इन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाए। बड़ा भंगाल का इलाका बाइल्ड लाइफ संकुरा के अंतर्गत आता है। इसलिए रास्तों एवं अन्य निर्माण कार्यों हेतु वन विभाग की स्वीकृति की आवश्यकता रहती है। इसके प्रक्रिया को सरकार को आसान बनाना चाहिए जिलाधीश कांगड़ा ने होली-चंबा के ग्रास्ते जाने वाली पैदल पथ की मरम्मत के लिए 5 लाख और सोलर लाइट्स के लिए 10 लाख रुपए देने की घोषणा की थी। यह प्रसन्नता का विषय है कि इन्विटर और अन्य सामग्री थोड़े-खच्चरों द्वारा बड़ा भंगाल पहुंचाई जा सकती है, जबकि हेलीकॉप्टर के माध्यम से सोलर पैनल भी पहुंचाए जा चुके हैं। हिम ऊर्जा विभाग (हिमाचल प्रदेश) द्वारा 61 लाख रुपए की लागत से 169 सोलर लाइट्स किट्स लगाई जा चुकी हैं। खुशी की बात है कि पिछली सर्दियों से पहले पहले बड़ा भंगाल के सभी 169 घरों में सोलर लाइट्स से घर रोशन हो चुके थे। सेक्रेटरी पीडब्ल्यूडी ने सड़क निकालने और बंद पड़े सड़क मार्ग के निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के आदेश दिए हैं। हिमाचल सरकार गर्मियों के सीजन में यदि चार महीनों के लिए ही सही ऑनलाइन बुकिंग द्वारा हेलीकॉप्टर सेवा और बड़ा भंगाल में पर्यटकों के रहने-खाने की व्यवस्था एक पैकेज के तहत व्यवस्थित तरीके से करें तो निश्चित तौर पर बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आना और ठहरना चाहेंगे, जिससे न केवल बड़ा भंगाल क्षेत्र में पर्यटक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा, अपितु राज्य की आर्थिकी को भी मजबूती मिलेगी। इस क्षेत्र की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता से होना चाहिए।

आवारा-जंगली जानवर मचा रहे तबाही

रमेश धवाला

अगर हम गौर से देखेंगे तो पाएंगे कि इस समस्या के लिए मानव का स्वार्थ जिम्मेदार है। जब तक गाय दूध देती है, या बैल हल जोतता है, हम उनको अपने घर में रखते हैं, बूढ़े होने पर आवारा छोड़ देते हैं हिमाचल प्रदेश की हलचल भरी सड़कों, शहर के शोरगुल और ग्रामीण क्षेत्रों के शांत वातावरण में एक बात कॉम्पन ने- आवारा जानवर और जंगली जानवरों का डर। ये आवारा भटकते जीव, जिन्हें अक्सर लोगों द्वारा खुली सड़कों या जंगलों में अपनी स्वार्थ सिद्ध होते ही घर से दूर खदेड़ दिया जाता है, मानव के लिए कई खतरे पैदा करते हैं, जिसमें सबसे प्रमुख खतरा कृषि क्षेत्र में देखने को मिलता है। इसी तरह विकास कार्यों के कारण निरंतर जंगलों की कटाई के कारण जंगली जानवरों के निवास स्थानों पर संघ लगाई जा रही है जिस कारण जंगलों से बाहर भोजन की तलाश और निवास स्थानों की तलाश में जंगली जानवर शहरों या गांव-घरों तक पहुंच रहे हैं। इस कारण ग्रामीण लोगों और शहरी लोगों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है जिसमें एक मुख्य समस्या है कृषि, फसलों में इनकी दखल। पिछले हफ्ते मैं ज्वालामुखी विधानसभा के एक छोटे से गांव मजीन में गया हुआ था। वहां गत्ते में कुछ लोग मिले जो कुछ आवारा पशुओं को सड़क पर खदेड़ रहे थे। मैंने ये सब देख कर अपनी गाड़ी रोक कर ग्रामीणों से बात की तो पता चला कि कोई रात के अंधेरे में इन पशुओं को गाड़ी में छोड़ कर चला गया है। ग्रामीण परेशान थे क्योंकि अभी गेहूं पकने का समय है और इन आवारा जानवरों ने उनके खेतों में आंतक मचाया हुआ है। कृषि हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था की आधारशिला है, जो कि आबादी के एक बड़े हिस्से को रोजगार प्रदान करती है और जीविका के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करती है। हिमाचल में आज भी कृषि के लिए



गाय-बैल सहित अन्य कई जानवर भिन्न-भिन्न रूपों से सहायक हैं, कि न्तु आज गाय, बैल, जंगली सूअर, हिरन और बंदरों सहित कई आवारा जानवर किसानों की आजीविका और कृषि भूमि की उत्पादकता के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहे हैं। ज्वालामुखी और देहरा विधानसभा क्षेत्रों के यही हाल हैं। हिमाचल प्रदेश की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है और अधिकांश लोग किसान और बागवान हैं। आप चाहे ऊना के समतल में जाओ या शिमला और किन्नौर के पहाड़ों में, किसान आवारा और जंगली जानवरों से फसलों को हुए नुकसान के कारण खेतीबाड़ी छोड़ने को विवश हैं। हालांकि यह समस्या केवल हिमाचल की ही नहीं, अपितु पूरे भारतवर्ष की समस्या है। देश के अन्य राज्यों में चाहे किसान इस समस्या के प्रति इतने मुख्य न हों, लेकिन हिमाचल में किसान फलों और फसलों को हो रहे नुकसान पर कई बार आन्दोलन एवं विधानसभा का घेराव कर चुके हैं। एक अनुमान के अनुसार ये जानवर हर साल करीब 500 करोड़ की फसलों का नुकसान हिमाचल प्रदेश में करते हैं। हिमाचल के कई स्थानों पर किसानों ने फसल बीजाना ही बंद कर दी है।

मेरे ज्वालामुखी विधानसभा के कई क्षेत्र जैसे भडोली, कुटियारा आदि उपजाऊ क्षेत्रों में लोगों ने जंगली और आवारा जानवरों के कारण खेतीबाड़ी करना छोड़ दिया है, जो कि प्रदेश हित में एक सोचनीय विषय है। केन्द्र सरकार ने सन् 1972 में बंदरों के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाया था, जो कि अब प्रदेश की हालत देखते हुए हटना चाहिए। राज्य सरकार के आग्रह पर हिमाचल की कई पंचायतों में बंदरों को वर्मिन (हिंसक जानवर) घोषित किया है एवं फ्ल व फसलों को नुकसान देने वाले बंदरों को मारने की अनुमति केंद्र से मिली हुई है। लेकिन इस सबके बावजूद राज्य सरकार ने बंदरों को मारने से हाथ रखीं लिए हैं। सरकार चाहती है कि किसान खुद बंदरों को मारें, लेकिन हाथों में हल पकड़ने वाले किसान बंदूक कैसे पकड़ें? एक सर्वे के अनुसार प्रदेश में पौने चार लाख के करीब बदर हैं, जो कि पिछले दो दशकों से फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। हिमाचल के किसान यह मांग करते आए हैं कि बंदरों के निर्यात पर जो प्रतिबन्ध लगा है, उसको हटाया जाए। पहले भारत विदेशों में प्रतिवर्ष करीब 60 हजार बंदरों को निर्यात करता था, जिस पर पशु प्रेमी संगठनों के विरोध

